REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन"

डॉ. सपना शर्मा[1] , प्रो. राधारानी सक्सेना[2] , कु. मीनाक्षी[3]
[1]सहा.प्रो. शिक्षा संकाय , बनस्थली विद्यापीठ , टोंक.
[2]से.नि. प्राचार्य–शिक्षा विभाग , सुरेश ज्ञान विहार विश्वविद्यालय , जगतपुरा, जयपुर.
[3]शोध छात्रा, बनस्थली विद्यापीठ , टोंक.

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है। अतः यह देखा जा सकता है कि मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। चूंकि परिणाम यह दर्शाते है कि मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है।

अतः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर मानसिक रूप में स्वस्थ रहने पर निर्भर करती है जिससे यह शोध पत्र मानसिक स्वास्थ्य के विकास में भी सहायक सिद्ध हो सकेगा।

प्रस्तावना

ईश्वर द्वारा निर्मित सभी जीवों में "मानव" श्रेष्ठ कृति है क्योंकि उसे ईश्वर प्रदत्त "अद्भुत मस्तिष्क" प्राप्त हुआ है जिसके द्वारा वह सोचने, समझने, मनन करने, तर्क करने, समस्या समाधान तथा सृजनात्मकता की पूर्ति आदि कार्यों को कर सकता है। उसे "भाषा" रूपी एक उपहार ईश्वर से प्राप्त हुआ जो निश्चित ही उसे सभी जीव–जन्तुओं में श्रेष्ठता प्रदान करता है। लेकिन मनुष्य को श्रेष्ठ मानव बनाने में उसे आदिमानव से मानव बनाने मे अगर किसी की श्रेष्ठ भूमिका निसंदेह है तो वह उसे माँ सरस्वती द्वारा प्रदत्त "शिक्षा का वरदान।"

शिक्षा मानव जीवन को जीव–जन्तुओं तथा पशु–पक्षियों के जीवन से पृथक रूप में प्रस्तुत करके मानव की सर्वोत्तम परिभाषा को स्पष्ट करती है। मानव यद्यपि धरती की सर्वोत्तम कृति है, परन्तु शिक्षा मानव को सुसंस्कृत बनाती है और इसके मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक विकास में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहायक होती है।

मानवीय चेतना के प्रारम्भ से ही माना जाता है। शिक्षा मनुष्य के सामान्य व्यवहार के साथ–साथ विशिष्ट व्यवहार को भी सर्वोत्तम ढंग से सम्पादित करती है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य नाम मात्र का ही मनुष्य बन कर रह सकता है। मनुष्यता की वास्तविकता पहचान शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। मनुष्य ने असम्भव से असम्भव कार्य को शिक्षा द्वारा ही सम्भव बनाया है। आज शिक्षा की देन है कि हम सैंकड़ो वर्ष बाद घटने वाली घटनाओं के सम्बन्ध में पूर्व से ही घोषणा कर देते है। शिक्षा द्वारा ही सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष, प्राकृतिक परिघटनाओं जैसे भूगर्भीय हलचल, भूकम्प, हिमस्खलन, तूफान तथा बारिश का सटीक अनुमान आदि आवश्यक घटनाओं की जानकारी भी प्राप्त करने में सफलता मिलती है।

इतना ही नहीं सुनामी लहरों जैसी प्राकृतिक हलचलों के सम्बन्ध में भी पर्याप्त जानकारी प्राप्त करके भावी सुरक्षा के इन्तजाम करते है।

शिक्षा ने विभिन्न नवीनतम अविष्कारों और खोजों को जन्म दिया है। मनुष्य जिज्ञासु है परन्तु उसकी जिज्ञासापूण उम्मीदों को वास्तविकता का रूप देने में शिक्षा का ही योगदान रहा है। शिक्षा के कारण आज विश्व का प्रत्येक नागरिक विश्व की सभी छोटी–बड़ी घटनाओं से जुडा है। शिक्षा ने मनुष्य की संकीर्णता को दूर करके उसे विशाल और स्वच्छ विचारधाराओं वाले महासागर में साहसपूर्वक तैरना सिखाया है। अतः शिक्षा के कारण हमने राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक जगत में चहुँमुखी विकास किया है।

समस्या का औचित्य :–

वर्तमान समय में बालकों का शैक्षिक स्तर उनका ज्ञाान तथा तकनीकी के प्रति लगाव बढ़ा है। प्रत्येक बालक उच्च शिक्षित होकर अपना नाम कमाना चाहता है। लेकिन क्या अभिभावकों की बालकों के प्रति उच्च महत्वकाक्षांये रखना सर्वदा उचित है ? वर्तमान समय मे अत्यनत कम आयु के छात्रों में तनाव, अवसाद, दबाव, मानसिक रोगों के साथ–साथ निम्न तथा उच्च रक्तचाप (बी.पी.) जैसी बीमारियां भी देखने को मिल रही है जो इस ओर संकेत करती है कि कहीं न कही बालकों के मानसिक स्वास्थ्य स्तर को स्वस्थ रखने में हमसे कमी हो रही है। मानसिक स्वास्थ्य एक ऐसा कारण है जो अप्रत्यक्ष रूप से बालक/व्यक्ति के व्यक्तित्व उसके शारीरिक स्वास्थ्य पर स्पष्ट प्रभाव डालता है।

किशोरावस्था में बालक के मानसिक स्वास्थ्य का सतर सही रखना अत्यन्त आवश्यक होता है क्योंकि यही वह दौर होता है जब बालक आगामी जीविकोपार्जन के लिये विभिनन विषयों का चुनाव कर अपने भविष्य की आधारशिला रखते है। उनके ऊपर अभिभावकों की अनावश्यक उम्मीदों का बोझ उनकी मासूमियत, सजृनशीलता तथा स्वस्थ क्रियाकलापों जैसे रूचि के कार्य करना आदि को धीरे–धीरे औचित्यहीन साबित कर देता है जिसका नकारात्मक असर उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर भी पड़ने लगता है। लगातार मेहनत करने पर भी मनमाफिक अंक न आना, उन्हें हतोत्साहित करता है। अभिभावकों की 90 प्रतिशत + के प्रति अंधी दौड़ उनके स्वाभाविक मानसिक विकास को बुरी तरह प्रभावित करती है।

एनी डीसूजा (2012) ने शोध किया कि छात्रों के तनाव, शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि मे लिंग के आधार पर कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया। अतः शोधार्थी ने संबंधित साहित्य का अध्ययन करने पर पाया कि मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक आकांक्षा का अन्य चरों के साथ कार्य हुआ है।

अतः उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को अपने शोध के लिये चुना।

समस्या कथन :–

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया जाता है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर पाया जाता है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध पाया जाता है।

तकनीकी शब्दावली :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर :– उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 11 व 12 के विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों से है।
2. मानसिक स्वास्थ्य :– मन व मस्तिष्क को स्वस्थ स्वरूप में रखकर कार्य करने की क्षमता बनाये रखना ही मानसिक स्वास्थ्य है।
3. शैक्षिक उपलब्धि :– शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है कि छात्र, शिक्षक व संस्था द्वारा अपने लघु या दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्यों को हासिल करना।

शोध अध्ययन की विधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :–

जयपुर जिले के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत 60 छात्र तथा 70 छात्रों को यादृच्छिक न्यादर्शन द्वानरा चयन किया गया है।

न्यादर्शन विधि :–

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया है।

उपकरण :–

1. मानकीकृत – प्रस्तुत शोध में अरूण कुमार सिंह और अल्पना सेन द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य बैटरी का प्रयोग किया गया है। यह कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों हेतु है।
2. स्वनिर्मित सूचना प्रपत्र

प्रयुक्त सांख्यिकी :– प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

मुख्य परिकल्पना :–

उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं पाया जाता है।

श्रेणी स्वास्थ्य	संख्या	मध्यमान	r
कला वर्ग के विद्यार्थी	100	87	0.04
विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी	100	86.3	

$df = N^1 + N^2 - 2,$ $100 + 100 - 2 = 198$

0.05 स्तर पर r का मान = 0.677

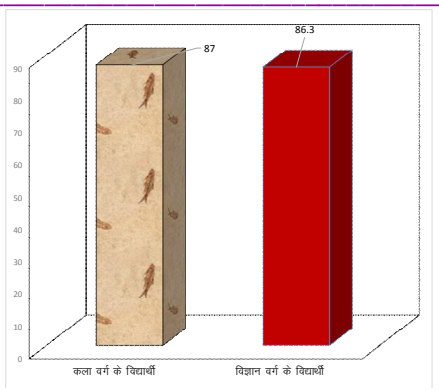

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

उपयुक्त तालिका में उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में कला वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान 87 तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 86.3 तथा मानसिक स्वास्थ्य व शैक्षिक उपलब्धि का सहसम्बन्ध 0.04 है।

इस तात्पर्य यह है कि उच्च माध्यमिक स्तर के कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सह–सम्बन्ध दृश्य नहीं है।

अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि कला व विज्ञान के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सहसम्बन्ध नही पाया जाता है।

शैक्षिक निहितार्थ :– कोई भी शोधकार्य तभी सफल मान जा सकता है जब वह शिक्षा के क्षेत्र में अथवा समाज और राष्ट्र के लिये ऐसा योगदान प्रस्तुत करता हो जो कि दूरगामी समस्याओं के समाधान के लिये आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव को जानने की दृष्टि से एक सर्वेक्षण के रूप में किया गया है। अतः प्राप्त निष्कषों के शैक्षिक अनुप्रयोग निम्नलिखित हो सकते है।

- इस अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य स्तर का पता लगाया जा सकता है अतः प्राप्त निष्कर्ष विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में उन्नति हेतु कार्य योजना के लिए सुझाव प्रदान कर सकते है।
- विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में शोधकर्ता को भावी सुधार कार्य हेतु प्रेरित करने में सहायक सिद्ध होंगे।
- यह अध्ययन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के विकास हेतु मार्ग दर्शन में सहायक सिद्ध हो सकेगा।
- अभिभावकों के लिये इस रूप में सहायक सिद्ध होगा कि विद्यार्थी के मानिसक स्वास्थ्य के विकास के लिए प्रयास करेंगे।
- शिक्षकों के लिये इस रूप में यह अध्ययन सहायक सिद्ध होगा कि शैक्षिक उपलब्धि को सुधारने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों को आयोजन कर सकेंगे।

अतः यह अध्ययन उच्च माध्यमिक स्तर के साथ–साथ प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के विकास में भी सहायक सिद्ध हो सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कपूर, एम. (1995) 'मेन्टल हैल्थ ऑफ इंडियन चिल्ड्रन' सेज पब्लिकेशनए न्यू दिल्ली
2. माथुर, एस.एस. (2005) 'एजुकेशनल साइकोलोजी' विनोद कुमार पुस्तक मंदिर, आगरा
3. गुप्ता, एस.पी., गुप्ता अलका (2010) 'उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान' शारदा पब्लिकेशन, इलाहाबाद
4. एडविन, एस.आर. तथा मिनीकुमारी, वी. (2012) 'मेंटल हैल्थ स्ट्रेटस ऑफ सुनामी अफैक्टेड स्टूडेन्ट्स, ऐडूटैक्रम' न्यू दिल्ली वाल्यूम XI(3)